लगा दिए उमंग-उत्साह के पंख

● ब्रह्माकुमार स्वरूप, चक्रधरपुर (झारखंड)

मुझे अतीन्द्रिय सुख और शुद्ध नशा है कि कोटों में कोई, कोई में भी कोई के रूप में शिवबाबा ने अपना बच्चा बनाया और अब हाथ में हाथ रख अपने साथ का सदा अनुभव कराते हुए उमंग-उत्साह के पंख लगा दिये हैं।

कोलकाता सॉल्टलेक स्थित ईस्टर्न योगा रिसर्च एंड फीजिकल इंस्टीट्यूट का प्रशिक्षु होने के कारण मेडिटेशन के बारे में सुना था। चक्रधरपुर अंचल कालोनी में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से सेवाकेन्द्र खुलने की जानकारी मिलते ही मन में ज्ञान प्राप्ति की उम्मीद जग गयी, वहां पर मेरी मुलाकात एक श्वेत वस्त्रधारी बहन से हुई। उन्होंने मुझे इस विश्व विद्यालय के बारे में कुछ जानकारी दी और सात दिन का कोर्स पूरा करने की नेक सलाह दी। मन में ढेर सारे प्रश्न उमड़ने लगे कि इनकी कड़ी शर्तें होंगी एवं शुल्क भी ऊंचा होगा पर बहन जी ने मेरी जिज्ञासा को शांत करते हुए स्पष्ट कर दिया कि यहां आने के लिए कोई शुल्क अदा नहीं करना होता, जितना हो सके अपना भाग्य जमा करने का पुरुषार्थ अवश्य करना है।

प्रथम दिन ही बाबा पर निश्चय

उन दिनों मेरे सिर में दर्द रहता था। बेनोसाईड-25 एमजी नामक अंग्रेजी दवा की 63 खुराक 21 दिनों तक सेवन करने से कुछ आराम मिला था। पहले दिन ही जिज्ञासु परिचय प्रपत्र भरवाये जाने के समय ही मुझे स्पष्ट अनुभव हुआ कि बहन जी की सीधी दृष्टि जब-जब मेरे पर पड़ती, लगता, कोई अदृश्य शक्ति मेरे दर्द को निचोड़ कर निकालने की कोशिश कर रही है। प्रपत्र भरते समय दो-तीन प्रश्नों में उलझा तो बहन ने इतने सहज तरीके से समाधान दे दिया कि मन के भीतर शांति और स्थिरता का अनुभव हुआ। इससे लगने लगा, जीवन है तो इन्हीं ब्रह्माकुमारी बहनों का। मैंने उसी दिन से निश्चय कर लिया कि मुझे भी ईश्वरीय ज्ञान को धारण करना है।

मानो तीसरा नेत्र खुल गया

आगामी दिन से नियमित क्लास करने का समय बहन जी के साथ तय कर, लौटते समय अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने लगा जैसे कि कुबेर का खज़ाना मेरे हाथ लग गया हो। मित्र-संबंधियों को सुनाया तो उन सब ने इस मार्ग से बचने के लिए मुझे बहुत समझाया और विरोध भी किया। मैं अनगिनत सवालों में गोता लगाने लगा पर 'विघ्न ही आत्मा को बलवान करते हैं', इस स्लोगन ने मेरी आशा को उज्ज्वल और अधिक मज़बूत कर दिया। सात दिन का कोर्स करते-करते बाबा के साथ के अनुभवों की छाप से मन खिलते गुलाब जैसा हो गया। कोर्स पूरा होते ही मुझे सम्पूर्ण निश्चय हो गया कि सचमुच यह ज्ञान असाधारण है। मैं सात्विक जीवन जीने का अभ्यासी बन गया। मुरली क्लास करना शुरू किया जिससे मुझे बहुत ही खुशी मिलने लगी और मन के सारे प्रश्नों का हल मिलने लगा।

अचानक मिला प्रस्ताव

दिसम्बर, 2010 में एक दिन शाम मुरली क्लास खत्म करने के उपरांत बहन जी ने मुझे मधुबन चलने का निमन्त्रण दिया। मैंने खुशी-खुशी हाँ कर दी। फिर हरेक धारणा को अक्षरश: पालन करने का संकल्प लिया। मधुबन में दादियों एवं वरिष्ठ भाइयों के अलौकिक स्नेह के

अलावा वहां के वातावरण में नम्रता, मीठी-मीठी बातें, तनावमुक्त चलन और चेहरे देखकर हमारी सब उलझनें चुटकियों में हल हो गईं, हम गुलगुल हो गए। बापदादा मिलन में अपने पुराने दु:ख व दर्द को भूलने के लक्ष्य से बाबा को कहा, बाबा, अब तो मेरा कुछ भी नहीं, सब कुछ तेरा, अब जो डायरेक्शन देंगे, कर्मेन्द्रियां वही करेंगी। हम ज्ञान सरोवर, पांडव भवन, पीस पार्क, देलवाड़ा मंदिर, ग्लोबल अस्पताल भी गए। वहां की सत्यता और पवित्रता ने मेरी आंखें खोल दी।

अब तो बाबा में ही मेरा संसार

जीवन प्यारे बाबा की पनाह में सहज़ ही गुज़र रहा है। ईश्वरीय भाई-बहनों के साथ और सहयोग से दो बार बापदादा से मिलन करने का अवसर मिला है। आश्चर्य होता है कि परमात्म-पालना में पलने वाली आत्मा बनते ही परेशानियां, तनाव, चिंता दुम दबाकर भागने लगे हैं। सिरदर्द की कोई भी दवा लेने की अब ज़रूरत नहीं पड़ती। मैं बाबा को कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने विकारी संस्कारों को हटाकर दैवी संस्कारों की अहमियत बता दी। निमित्त बहनों का शुक्रिया अदा करते हुए अब तो मैं बाबा में ही अपना संसार देखता हूँ। ❖

उबर चुकी हूँ दुखों से

● डिम्पल सेवक, उरण (नवी मुम्बई)

मैं आत्मा बचपन से ही संघर्षों और तकलीफों का जीवन व्यतीत कर रही थी। उस समय मैं सोचती थी कि क्या भगवान ने सब तकलीफें मेरे लिए ही बनाई हैं। पिताजी की शराब पीने की आदत से हमारा पूरा परिवार बहुत दुखी था। वो आये दिन झगड़ा करते, चिल्लाते, मारते-पीटते, गालियाँ देते – ये सब नारकीय यातनायें मैंने झेली। तब से मैं प्रभु को बहुत याद करती थी। धीरे-धीरे समय बदला, शादी हो गई। वैवाहिक जीवन भी काँटों भरा ही रहा। सास के ताने, जेठानी की बातें, पति कुछ मानता नहीं था, इस संघर्ष में वैवाहिक जीवन के 15 वर्ष बीत गये।

पिछले तीन वर्षों से ज्ञान में चल रही हूँ। अब धीरे-धीरे परिवर्तन आ रहा है। मुझे लगता है कि दुख के बाद ही सुख आता है। जीवन में इतना दुख शायद परमात्मा मिलने की खुशी के लिए ही आया था। परमात्मा का सहारा मिलने के बाद से मुझे बहुत खुशी है। हमारे चारभुजा (जिला-राजसमन्द-राजस्थान) स्थित हमारे घर में दीदी ने सेवा प्रारम्भ करवा दी है और वह घर ''बाबा का घर'' बन गया है।

मैं भी परमात्मा की कृपा से दुखों से उबर चुकी हूँ। अब ज्ञान में आने के बाद मुझे अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होने लगा है। मेरी सभी धारणाएँ पक्की हैं। जीवन की इस अनमोल घड़ी में मैं आत्मा शीघ्र अतिशीघ्र अपने पिता से मिल जाऊँ, यही जीवन का लक्ष्य है। मुझे ज्ञान में आने के बाद कई बार श्रीकृष्ण के साक्षात्कार हुए हैं और सतयुग के सभी साक्षात्कार हुए हैं, तब से मुझे विश्वास हो गया है कि यह ज्ञान स्वयं परमात्मा का है।

ज्ञान में आने से पहले 'श्रीमद्भगवद्गीता' समझ में नहीं आती थी। योगी शब्द की परिभाषा तो बिल्कुल समझ में नहीं आती थी लेकिन अब तो पूरी गीता का सार समझ में आ गया है, ''वाह बाबा वाह, वाह मेरा भाग्य वाह।'' ❖